टिप्पणी

23

हिंदी के विविध प्रयुक्ति-क्षेत्र

विगत दशकों में हिंदी के प्रयोग-क्षेत्र में व्यापक वृद्धि हुई है। आज हिंदी हमारी मातृभाषा, राजभाषा या साहित्य की भाषा मात्र न रहकर ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों और बाजार की विविध जरूरतों की भी भाषा बन गई है जिससे हिंदी के अनेक रूपों का विकास हुआ है। हिंदी के इन विविध रूपों ने हिंदी के भाषिक प्रयोग की सीमा का विस्तार किया है और इनमें रोजगार की अनेक संभावनाएँ दिखाई दे रही हैं। हिंदी के इन विविध रूपों को जानना और अन्य क्षेत्रों तक उसका विस्तार करना आज की आवश्यकता है।

इस पाठ में हम हिंदी के ऐसे ही विविध प्रयुक्ति-क्षेत्रों के विषय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप–

- प्रयोजनमूलक भाषा का आशय स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रयुक्ति की संकल्पना प्रस्तुत कर सकेंगे;
- प्रयुक्ति के प्रमुख आधारों का वर्णन कर सकेंगे;
- हिंदी भाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों का उल्लेख कर सकेंगे; और
- प्रयुक्तियों के स्वरूप और उनके व्यवहार क्षेत्र का उल्लेख कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 23.1

अपने नजदीकी बैंक शाखा में जाकर माँगपत्र (Demand Draft form) का प्रारूप देखिए और उसमें आए बैकिंग से संबंधित विशिष्ट शब्दों को यहाँ लिखिए।

.....

.....

23.1 प्रयोजनमूलक भाषा और प्रयुक्ति

हिंदी के विविध प्रयुक्ति-क्षेत्रों को जानने से पूर्व हमारे लिए हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप को समझना आवश्यक है। प्रयोजनमूलक शब्द Functional शब्द के हिंदी पर्याय के रूप में इस्तेमाल होता है। इसी को आधार बनाकर अंग्रेजी में 'प्रयोजनमूलक भाषा' के लिए Functional Language और Language for specific purpose शब्द प्रयुक्त होता है। जिसका तात्पर्य है 'किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।' इसे इस रूप में भी कहा जा सकता है कि 'रोजमर्रा के जीवन की विविध विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जो भाषा प्रयोग में लाई जाती है, वह प्रयोजनमूलक भाषा होती है। इस प्रकार की भाषा का क्षेत्र सीमित होता है जिसका मुख्य लक्ष्य जीविकोपार्जन का साधन है। यह प्रशासन, विधि, बैंक, पत्रकारिता और वाणिज्य के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है। ये समस्त क्षेत्र औपचारिक भाषा प्रयोग के क्षेत्र हैं जिनके लिए किसी भी भाषा का विकास करना और उस भाषा रूप के द्वारा कार्य को आगे बढ़ाना प्रयोजनमूलक भाषा का प्रमुख उद्देश्य है। वस्तुतः अलग-अलग कार्यक्षेत्रों से संबंधित लोगों, जैसे–डॉक्टर, वकील, पत्रकार, वैज्ञानिक और व्यापारी आदि के द्वारा अपने कार्य क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा ही प्रयोजनमूलक भाषा का रूप धारण करती है। इस प्रकार विषयगत, भूमिकागत और संदर्भगत प्रयोगों के कारण भाषा-प्रयोग में जो अनेक विविधता पैदा होती है उसे भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में भाषा-प्रयुक्ति कहा जाता है। आइए, प्रयुक्ति की संकल्पना और स्वरूप को विस्तार में समझने का प्रयास करते हैं।

23.2 प्रयुक्ति की संकल्पना और स्वरूप

आपने देखा होगा कि विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों और भिन्न-भिन्न भूमिकाओं में किसी व्यक्ति के भाषिक व्यवहार में किस प्रकार के परिवर्तन होते हैं, इसे समझने-समझाने का प्रयास ही प्रयुक्ति की संकल्पना का मूल है। शब्दावली और भाषागत संरचना प्रयुक्ति का मुख्य आधार है। आइए इन विभिन्न प्रयुक्तियों का विश्लेषण हम दो बिंदुओं के आधार पर करें। पहला बिंदु भाषा, उसकी व्याकरणिक व्यवस्था और उसकी संरचना के नियमों से संबंधित है जबकि दूसरा बिंदु भाषा के व्यावहारिक पक्ष से संबंधित है जो बताती है कि भाषा किन प्रयोजनों को साधती है और उसके प्रयोक्ता उससे क्या कार्य लेते हैं? आप जानते ही हैं कि प्रयुक्ति शब्द प्रयुक्त में 'इ' प्रत्यय लगाकर बना है। प्रयुक्त का अर्थ होता है प्रयोग में लगा हुआ। भाषा का जो रूप किसी विषय में बार-बार प्रयुक्त होता है वह उस क्षेत्र की भाषिक विशिष्टता बन जाता है। यही भाषिक विशिष्टता उस विषय क्षेत्र की प्रयुक्ति कहलाती है। हिंदी में प्रयुक्ति शब्द अंग्रेजी के Register शब्द के पर्याय के रूप में इस्तेमाल होता है। सामाजिक जीवन व्यवहार में हर क्षेत्र की भाषा की विशेषताओं को देखते हुए ही भाषाविदों ने प्रयुक्ति की संकल्पना निर्धारित की है। आइए प्रयुक्ति के संबंध दी गई कुछ परिभाषाओं को पढ़ते हैं।

टिप्पणी

1. रीड के अनुसार–''जब कोई व्यक्ति भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से एक जैसी स्थितियों में एक जैसा व्यवहार नहीं करता। विभिन्न सामाजिक स्थिति में उसका व्यवहार (भाषिक) बदलता जाता है। वास्तव में वह विभिन्न भाषा प्रयुक्तियों का प्रयोग करता है।

2. डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार–''जब किसी भाषा का प्रयोग विभिन्न विषयों में होता है तो उसके तरह-तरह के रूप विकसित हो जाते हैं, जिन्हें 'प्रयुक्ति' कहते हैं।''

3. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार–''किसी निश्चित परिस्थिति में सामाजिक दायित्व के निर्वाह के निमित्त वक्ता द्वारा प्रयोग में लाई गई भाषा शैली ही 'प्रयुक्ति' है।''

अब तक आप जान गए होंगे कि भाषा के प्रयोजन और सन्दर्भ महत्वपूर्ण होते हैं। प्रयुक्ति की संकल्पना के साथ सामाजिक भूमिका की संकल्पना भी जुड़ी होती है। एक व्यक्ति परिवार का मुखिया, अध्यापक, व्यवसायी या वैज्ञानिक कुछ भी हो सकता है और इन अलग-अलग भूमिकाओं में वह भिन्न-भिन्न भाषारूपों का व्यवहार करता है। क्योंकि विभिन्न भूमिकाओं में उस व्यक्ति के अपने अलग वाक्यांश, पदबंध, मुहावरे या शब्दावली होगी। नेता, बच्चे, वृद्ध, कृषक आदि विभिन्न स्तर के लोगों के भाषा रूप अलग-अलग होते हैं। इसी प्रकार समान व्यवसाय से जुड़े लोगों के भाषिक प्रयोग में समानता दिखाई देती है। इसी के आधार पर प्रयुक्ति का निर्धारण होता है। आइए उदाहरण के रूप में विज्ञान की भाषा को देखते हैं कि वैज्ञानिक, उस क्षेत्र के तकनीकी सहायक, अध्यापक, विद्यार्थी और लेखक इत्यादि विभिन्न स्तरों के व्यक्ति उस क्षेत्र की भाषा से परिचित होंगे।

तो आइए प्रयुक्ति की संकल्पना से परिचित होने के बाद अब हम प्रयुक्ति के स्वरूप पर विचार करें।

आप जानते हैं कि भाषा का विकास सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है इसीलिए अपने विकास की प्रक्रिया में ही वह व्यक्ति से हटकर समाज सापेक्ष हो जाती है। भाषा का व्यावहारिक पक्ष यही है। भाषा प्रयोग के क्षेत्रों अथवा संदर्भों में विविधता के आधार पर ही प्रयुक्तियों के स्वरूप में वैविध्य पैदा होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रयुक्तियों में भेद विषयगत और प्रयोगगत होता है। व्यापार की भाषा वस्तुतः विज्ञान की भाषा से भिन्न होती है किंतु अर्थशास्त्र विषय से संबंधित प्रयुक्ति अधिक व्यापक होगी जिसमें व्यापार के क्षेत्र में प्रयोग होने वाली शब्दावली और अभिव्यक्तियाँ सम्मिलित हैं। प्रयोग के स्तर पर भी प्रयुक्ति के दो स्वरूप होते हैं– भाषा प्रयुक्ति शैली और भाषा प्रयुक्ति। प्रयुक्ति के अंतर्गत शैलीगत भेद भी महत्वपूर्ण होता है इसके तहत भिन्न-भिन्न स्थानों और प्रसंगों में एक ही शब्द के अनेक प्रचलित पर्यायों में से उपयुक्त शब्द का चुनाव करना पड़ता है।

आइए, उदाहरण के रूप में, अंग्रेजी के शब्द Director पर विचार करते हैं। Director शब्द के हिंदी में दो अर्थ हैं– 1. निदेशक 2. निर्देशक। दोनों का प्रयोग क्षेत्र निर्धारित है। निदेशक शब्द का इस्तेमाल प्रायः प्रशासनिक क्षेत्र में होता है कामकाज के स्तर पर भाषा का व्यावहारिक रूप (व्याकरण, शब्दावली एवं अभिव्यक्तियाँ) अलग-अलग होती हैं। जैसे, Director, School of Humanities के लिए 'निदेशक, मानविकी विद्यापीठ' लिखा जाएगा, Board of Directors के लिए 'निदेशक मंडल' का प्रयोग होगा और Director General of

Police के लिए 'पुलिस महानिदेशक' पद का व्यवहार किया जाएगा। जबकि 'निर्देशक' शब्द फिल्म या नाटक के क्षेत्र में प्रयुक्त होता है जैसे, Film Director के लिए 'फिल्म निर्देशक' लिखा जाता है। इस उदाहरण के अतिरिक्त भी कई अन्य उदाहरण हैं जिनसे आप प्रयुक्ति के स्वरूप को आसानी से समझ सकते हैं।

क्रियाकलाप 23.2

आप ऐसे तीन शब्दों का चयन कीजिए जिनका प्रयोग अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग अर्थों में होता है।

23.3 प्रयुक्ति का आधार

23.3.1 शब्दावली

आप यह समझ चुके हैं कि भाषा के विशिष्ट प्रयोगों के आधार पर विभिन्न प्रयुक्तियों का निर्माण होता है किन्तु इस सन्दर्भ में आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या एक प्रयुक्ति दूसरी प्रयुक्ति से सर्वथा भिन्न होती है और इन प्रयुक्तियों का निर्धारण किस आधार पर होता है? इन प्रश्नों के उत्तर में यही कहा जा सकता है कि प्रयुक्ति वास्तव में भाषा के भीतर एक भाषा का विशिष्ट रूप लिए होता है जिससे उस भाषा की व्यापक विशेषताएँ उसमें स्वत: ही आ जाती हैं। कहने का मतलब यह कि विभिन्न प्रयुक्तियों की शब्दावली मिलकर जब एक भाषा क्षेत्र की शब्दावली बनती है तो उस भाषा की संरचना और उसके सामान्य मुहावरे उन प्रयुक्तियों में भी आ जाते हैं। इसीलिए एक प्रयुक्ति का दूसरी प्रयुक्ति में अंत: प्रवेश बराबर होता रहता है। आइए एक उदाहरण के रूप में, हम किसी अखबार में प्रकाशित समसामयिक विषय पर आधारित लेख को देखते हैं। ऐसे आलेखों में प्राय: विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, खेलकूद आदि विषयों से संबंधित शब्दावली का प्रयोग दिखाई देता है। इसी प्रकार साहित्यिक लेखों में भी विज्ञान, दर्शन आदि की शब्दावली का समावेश आमतौर पर देखने को मिलता है। इसके बावजूद शब्दावली प्रयुक्ति का महत्त्वपूर्ण आधार होती है। शब्दावली प्रयुक्ति के निर्धारण में अहम भूमिका निभाती है। आइए जानें कि इसका निर्वहन किन रूपों में होता है।

1. क्षेत्र विशेष की विशिष्ट शब्दावली के रूप में। जैसे–अणु, परमाणु, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन इत्यादि विज्ञान विषय में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं।

2. विभिन्न क्षेत्रों में एक ही शब्द के अर्थ भिन्न-भिन्न हो सकते हैं जिसका एक उदाहरण हम पहले देख चुके हैं यहाँ हम एक और उदाहरण दे रहे हैं–'पद' शब्द का प्रयोग कविता के अंतर्गत 'छंद' विशेष के लिए होता है। आम बोलचाल में 'पद' शब्द का अर्थ 'पैर' है और प्रशासनिक क्षेत्र में 'पद' का अर्थ 'ओहदा' है।

टिप्पणी

प्रयुक्ति की पहचान के लिए शब्दावली के अतिरिक्त कुछ अन्य आधार भी होते हैं जिनकी चर्चा यहाँ की जा रही है–

23.3.2 भाषा प्रयोग का विषय-क्षेत्र

आप जानते हैं कि किसी विषय की विशेषता या संदर्भ ही भाषा का स्वरूप निर्धारित करते हैं। भाषा का प्रयोग जिस विषय क्षेत्र के लिए किया जाता है उस क्षेत्र विशेष की शब्दावली और वाक्य संरचना उस संदर्भ के अनुकूल होती है और उस विषय क्षेत्र में काफी सार्थक और निश्चित होती है। उदाहरण के रूप में, विधि क्षेत्र की भाषा को लिया जा सकता है। विधि (कानून) के क्षेत्र में एक निश्चित परिपाटी पर वाक्यों का प्रयोग किया जाता है जिससे एक औपचारिक किस्म की भाषा का सृजन होता है और जिसके अर्थ में एक निश्चितता होती है। न्यायालय के भीतर यदि दो व्यक्तियों के नाम के बीच 'बनाम' शब्द का प्रयोग किया जाए तो इसका एक निश्चित अर्थ यह निकलेगा कि उन दोनों व्यक्तियों के बीच न्यायालय में कोई मुकदमा चल रहा है। न्यायालय के भीतर 'बनाम' शब्द दो व्यक्तियों के बीच के विवाद के मामले की ही सूचना देता है। अन्य क्षेत्रों में 'बनाम' शब्द के साथ-साथ उसके अन्य अर्थों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है किन्तु न्यायालय में नहीं।

23.3.3 भाषा संप्रेषण का तरीका

भाषा संप्रेषित करने का ढंग प्रयुक्ति का स्वरूप निर्धारित करने का अहम हिस्सा है। लिखित और मौखिक संप्रेषण के अनुसार हमारी शब्दावली, वाक्य विन्यास और लहजा आदि में बड़ा परिवर्तन आता है। मौखिक संप्रेषण की अपेक्षा लिखित संप्रेषण में औपचारिकता और सतर्कता दोनों ही अधिक होती है।

23.3.4 वक्ता अथवा लेखक या श्रोता अथवा पाठक की स्थिति

लिखित और मौखिक दोनों तरह के सम्प्रेषण में इस बात का बहुत असर होता है कि कौन, किससे और कब बात कर रहा है। जैसे एक वकील जब अपने अन्य सहयोगी वकीलों से राय-मशविरा कर रहा हो तब और कोर्ट रूम में किसी मुकदमे पर बहस कर रहा हो तब उसकी भाषा के वाक्य-विन्यास, लहजे आदि में पर्याप्त अंतर होता है। वही वकील जब घर पर बात करता है तो एक खास तरह का अंतर दिखाई देता है।

23.3.5 औपचारिक और अनौपचारिक भाषा प्रयोग की स्थिति

ऊपर आपने जिस वकील का उदाहरण देखा, वह जब घर में बात कर रहा हो तब उसका भाषा व्यवहार कोर्टरूम के भाषा व्यवहार से भिन्न होगा। कहने का मतलब यह है कि घर में वह बिल्कुल अनौपचारिक भाषा का इस्तेमाल करेगा जबकि कोर्ट में मुकदमे पर बहस करते समय वह पूरी तरह औपचारिक और सचेत होगा। दूसरी स्थिति में उसकी भाषा विधि की प्रयुक्ति के भीतर आएगी, जबकि पहली स्थिति में ऐसा होना जरूरी नहीं है।

मोटे तौर पर आप उपर्युक्त पाँच आधारों को प्रयुक्ति निर्धारण में इस्तेमाल करते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि ये आधार हर प्रयुक्ति के संबंध में लागू हों।

पाठगत प्रश्न 23.1

1. किसी विशेष प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा कहलाती है?

   (क) लाक्षणिक भाषा (ख) अलंकारिक भाषा

   (ग) प्रयोजनमूलक भाषा (घ) सांकेतिक भाषा

2. निम्नलिखित में सत्य-असत्य का चयन कीजिए।

   (क) शब्दावली और भाषागत संरचना प्रयुक्ति का मुख्य आधार है। (सत्य/असत्य)

   (ख) प्रयुक्ति की संकल्पना के साथ सामाजिक भूमिका की संकल्पना जुड़ी होती है। (सत्य/असत्य)

   (ग) भाषा का विकास सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं होता है। (सत्य/असत्य)

   (घ) लिखित सम्प्रेषण की अपेक्षा मौखिक सम्प्रेषण में औपचारिकता और सतर्कता दोनों ही अधिक होती है। (सत्य/असत्य)

23.4 हिंदी के विविध प्रयुक्ति-क्षेत्र

आज के दौर में प्रयोजनमूलक हिंदी का तेजी से विकास हुआ है और बदली हुई जीवन स्थितियों में उसे अनेक नए दायित्वों से गुजरना पड़ा जिससे उसमें कई नए रूप विकसित हुए। प्राचीन काल में हमारी सामाजिक व्यवस्था कृषि एवं शिल्प आधारित व्यवस्था थी और हमारी भाषा की विभिन्न बोलियों में कृषि, हस्तशिल्प और व्यापार संबंधी प्रयुक्तियाँ पहले से ही विद्यमान थीं। औद्योगीकरण और वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के साथ हिंदी भाषा में नई प्रयुक्तियों का समावेश हुआ और आज भी हो रहा है। आने वाले समय में समाज और ज्ञान का विकास जिन-जिन क्षेत्रों में होता जाएगा और हिंदी भाषा का प्रयोग हम जिन-जिन क्षेत्रों में करते जाएंगे उन सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रयुक्तियां हिंदी में विकसित होती जाएँगी।

उदाहरण के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से व्यापक शब्दावली हिंदी में आई है। यह ऐसा क्षेत्र है जिसमें विस्तार और उपलब्धियों की अनन्त सम्भावनाएँ हैं। अत: इस क्षेत्र में हिंदी माध्यम में कार्य किया जाए तो संभव है आने वाले समय में कई नई प्रयुक्तियाँ विकसित हो जाएँ।

आप हिंदी की वर्तमान प्रमुख प्रयुक्तियों का निर्धारण इस प्रकार कर सकते हैं:

टिप्पणी

1. सामान्य व्यवहार या बोलचाल की हिंदी
2. साहित्यिक हिंदी
3. कार्यालयी हिंदी या प्रशासनिक हिंदी
4. वाणिज्य, व्यापार और बैंकिग के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी
5. वैज्ञानिक और तकनीक क्षेत्र में हिंदी
6. विधि के क्षेत्र में हिंदी
7. संचार माध्यमों में हिंदी
8. विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी

23.4.1 सामान्य व्यवहार या बोलचाल की हिंदी

आप जानते हैं कि सामान्य व्यवहार की हिंदी का इस्तेमाल दैनिक जीवन में बातचीत के रूप में होता है। ऐसी हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में सामने आती है जो प्राय: सगे संबंधियों औद्योगिक केन्द्रों, पर्यटन स्थलों और रेलवे प्लेटफॉर्म आदि पर प्रयुक्त होती है। आइए हिंदी को सामान्य हिंदी, साहित्यिक हिंदी और व्यावसायिक हिंदी के रूप में बाँटकर देखते हैं। हम यहाँ इसी सामान्य हिंदी की बात कर रहे हैं जो व्यक्तिगत स्तर पर प्रयुक्त होने वाली बोलचाल की हिंदी है। बोलचाल की भाषा होने के कारण इसमें व्याकरणिक नियमों का कोई निश्चित बंधन नहीं दिखाई देता है और हिंदी भाषी राज्यों के साथ ही कई अहिंदीभाषी राज्यों में भी बोलचाल के स्तर पर हिंदी का प्रयोग होने से सामान्य व्यवहार में इसके कई रूप दिखाई पड़ते हैं। जैसे– बंबइया हिंदी, दिल्ली की हिंदी, कोलकाता की हिंदी, हैदराबादी हिंदी और ऐंग्लो हिंदी आदि।

बंबइया हिंदी–मुम्बई और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बंबइया हिंदी का प्रयोग होता है। इस हिंदी में मराठी, गुजराती, राजस्थानी के साथ-साथ अवधी और भोजपुरी बोलियों का प्रभाव दिखाई देता है। उदयशंकर भट्ट का उपन्यास 'सागर, लहरें और मनुष्य' तथा जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का 'मुरदाघर' बम्बइया हिंदी के उदाहरण हैं।

उदाहरण–''काहे कूँ, रे दादा, खाली पीली गरीब का ऊपर गजब करता है।'' (बोरीवली से बोरी बन्दर तक, शैलेश मटियानी, पृ.-65)

दिल्ली की हिन्दी–दिल्ली की हिंदी पंजाबी और हरियाणी के प्रभाव से बनी हिंदी है। यही दिल्ली की बोलचाल की भाषा है। कुछ उदाहरण देखिए– (1) 'मेरे दादीजी गाँव चले गए'। (2) मैंने आज बाहर खाना है। (3) तूने आज घर नहीं जाना? और दिल्ली की हिंदी में पंजाबी के प्रभाव के कारण लिंग की अशुद्धियाँ मिलती हैं। उपर्युक्त वाक्य में 'मेरी दादीजी' की जगह 'मेरे दादीजी' का प्रयोग इसी प्रभाव के कारण किया गया है। इसी तरह हरियाणी के प्रभाव के कारण 'मैंने खाना है' या 'तूने जाना है' जैसे वाक्य सुनाई पड़ते हैं।

कोलकाता की हिंदी–कोलकाता में बोली जाने वाली हिंदी पर बांग्ला का प्रभाव है। कुछ उदाहरण देखिए–(1) बच्चों को पीटना यह तुम्हारा बहुत बड़ी गलती है। इस वाक्य में 'तुम्हारी' शब्द की जगह 'तुम्हारा' का प्रयोग किया गया है। (2) अजय ने असत्य बात बोला है। यहाँ भी 'बोली है' की जगह 'बोला है' शब्द का प्रयोग बांग्ला के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

हैदराबाद की हिंदी–दक्षिण भारतीय भाषाओं के प्रभाव के साथ बोली जाने वाली हिंदी हैदराबादी हिंदी कही जाती है। हैदराबादी हिंदी की वाक्य संरचना के साथ उसकी शब्दावली भी कुछ अलग तरह की है। उदाहरण के रूप में कुछ वाक्य देखिए–(1) तुमको क्या होना? आपको क्या चाहिए? (2) कल को गए सो आदमी कौन है? कल जो गए थे वो आदमी कौन है? आदि।

ऐंग्लो हिंदी–अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग बोलचाल में निरंतर बढ़ता जा रहा है। आज का शिक्षित युवा ऐंग्लो हिंदी का बहुतायत में प्रयोग करता है। जैसे–(1) मैं यूनिवर्सिटी कैम्पस में खड़ा हूँ। (2) हमारी सोसायटी में दो गार्ड हैं। आदि।

23.4.2 साहित्यिक हिंदी

साहित्य सृजन में प्रयुक्त होने वाली हिंदी में अभिधा, लक्षणा और व्यंजना तीनों शब्द शक्तियों का प्रयोग होता है। साहित्यिक हिंदी लालित्यपूर्ण और सरस होती है। जो संवेदनाएँ एवं भावनाएँ जगाकर हमें मानवीय बनाती है। इसमें कोई भी संदेह नहीं कि साहित्य सौन्दर्य की अनुभूति जगाने और रस का आस्वादन कराने में मुख्य भूमिका निभाता है।

उदाहरण के रूप में, आप दुष्यंत कुमार की इस कविता की कुछ पंक्तियों को देखिए-

हो गई है पीर पर्वत-सी, पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी।
शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

''इस चिरस्थाई जीर्णावस्था ने उसके आत्मसम्मान को उदासीनता का रूप दे दिया था। जिस गृहस्थी में पेट की रोटियाँ भी न मिलें, उसके लिए इतनी खुशामद क्यों? इस परिस्थिति में उसका मन बराबर विद्रोह किया करता था और दो चार घुड़कियाँ खा लेने पर ही उसे यथार्थ का ज्ञान होता था।''

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से आप साहित्यिक हिंदी के स्वरूप से परिचित हो सकते हैं। आप काव्य और गद्य की भाषा में दिखने वाले अन्तर को भी समझ सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 23.2

1. 'जल के महत्व' विषय पर अपने क्षेत्र की भाषा/बोली में पाँच वाक्य लिखिए।

2. नीचे दिए वाक्यों में सही/गलत का चयन कीजिए।

(क) बंबइया हिंदी बोलचाल की हिंदी का एक रूप है। (सही/गलत)

(ख) दिल्ली की हिंदी पर कश्मीरी का प्रभाव है। (सही/गलत)

(ग) कोलकाता की हिंदी पर बंगला का प्रभाव है। (सही/गलत)

(घ) विभिन्न बोलियों से मिश्रित हिंदी वैज्ञानिक भाषा कहलाती है। (सही/गलत)

क्रियाकलाप 23.2

आप फिल्में तो देखते ही होंगे, फिल्में देखते हुए आपने कभी उसमें बोली जाने वाली हिंदी पर ध्यान दिया है? अगर नहीं तो अब आप जब भी कोई हिंदी फिल्म देखें तो उसकी भाषा पर ध्यान दें। फिल्म की भाषा साधारण हिंदी से कुछ अलग लगे तो लगभग 20 नए शब्दों को लिखिए।

23.4.3 कार्यालयी हिंदी या प्रशासनिक हिंदी

विभिन्न कार्यालयों या प्रशासनिक कार्यों में इस्तेमाल होने वाली हिंदी कार्यालयी हिंदी अथवा प्रशासनिक हिंदी कहलाती है। आजादी के बाद सरकारी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालयों में हिंदी भाषा का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। अंग्रेजों के समय में कार्यालयी भाषा अंग्रेजी थी जबकि मुगलकाल में राजकाज की भाषा फारसी थी। क्या आपको पता है कि हिंदी भारत की राजभाषा कब बनी? तभी से हिंदी प्रशासनिक कामकाज में प्रयुक्त होने लगी। 14 सितंबर 1949 में हिंदी को संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा दिया गया।

प्रशासनिक भाषा के रूप में प्रयोग के साथ ही हिंदी में प्रशासनिक और कार्यालयी प्रयुक्तियों का विकास होने लगा। प्रशासनिक प्रयुक्ति के विकास में अंग्रेजी और फारसी दोनों का प्रभाव दिखता है। पहले प्रशासनिक शब्दावली अंग्रेजी में थी जिसे हिंदी में उपलब्ध करवाना अतिआवश्यक था। इसके लिए अनुवाद कार्य आरम्भ किया गया और हिंदी में प्रशासनिक शब्दावली तैयार की गई। इस तरह देखा जाए तो कार्यालयी हिंदी के विकास में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

कार्यालयी हिंदी के स्वरूप पर बात करें तो इसकी पहली विशेषता है–सरलता, स्पष्टता और बोधगम्यता। इस भाषा की यह शर्त है कि जिनके लिए प्रशासन का कार्य किया जा रहा है, उस आम जनता के लिए यह बोधगम्य हो।

कार्यालयी भाषा औपचारिक होती है लेकिन इस भाषा की औपचारिकता विज्ञान की भाषा की औपचारिकता से भिन्न होती है। कार्यालयी भाषा में आत्मनिष्ठता नहीं होती है। उच्च अधिकारी अधीनस्थ अधिकारी से और अधीनस्थ अधिकारी अपने उच्च अधिकारी से संवाद के क्रम में एक विशेष तरह की औपचारिकता का निर्वाह करता है। प्रशासनिक क्षेत्र में पारिभाषिक

शब्दावली का एक निश्चित अर्थ में ही प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए नीचे एक पत्र दिया जा रहा है आप इस पत्र को पढ़िए:

सं. एफ 1-6/2021 स्थान

भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

शास्त्री भवन, नई दिल्ली

दिनांक 22 जनवरी, 2022

सेवा में,

सचिव

संघ लोक सेवा आयोग

नई दिल्ली-110011

विषय : द्वितीय श्रेणी के राजपत्रित अधिकारियों के नियमितीकरण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

ऊपर दिए गए विषय पर इसी मंत्रालय के समसंख्यक पत्र दि. 7 दिसम्बर, 2020 के बारे में मुझे आपसे अनुरोध करने का निदेश हुआ है कि इस मंत्रालय के एक अधीनस्थ कार्यालय-केंद्रीय हिंदी निदेशालय के द्वितीय श्रेणी के राजपत्रित अधिकारियों की तदर्थ नियुक्तियों को नियमित करने के बारे में आयोग की सहमति शीघ्र भेजने की कृपा करें।

भवदीय

(पंकज कुमार)

अवर सचिव, भारत सरकार

उपर्युक्त पत्र में आपने ध्यान दिया होगा कि इस पत्र में कार्यालय का नाम, पत्र संख्या आदि लिखकर संबंधित अधिकारी के पदनाम से सम्बोधित करते हुए पर्याप्त औपचारिकता बरती गई है। ढाँचेगत औपचारिकता के साथ ही वाक्य विन्यास भी औपचारिक रखे गए हैं। ''मुझे आपसे अनुरोध करने का निदेश हुआ है'' जैसे वाक्य शैलीगत औपचारिकता के साथ ही कार्यालय की कार्यप्रक्रिया का भी उदाहरण पेश करते है। कार्यालयी हिंदी में 'निर्देश' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार 'समसंख्यक', 'तदर्थ' जैसे शब्द भी कार्यालयी हिंदी में ही देखे जाते हैं।

टिप्पणी

पत्र के भीतर आपने कर्मवाच्य के प्रयोग की विशेषता भी देखी- 'निदेश हुआ है' जैसे प्रयोग कार्यालयी भाषा की खूबी है। इस तरह के कुछ अन्य उदाहरण देखिए–

'वित्तीय वर्ष 2019 के लिए मुझसे 20000 रुपये आयकर देने की माँग की गई है।'

'सेवा निवृत्ति के बाद यदि सरकारी मकान तुरंत खाली न किया जाए तो उसका किराया बढ़ी दर से देना पड़ेगा।'। आदि।

कार्यालयी या प्रशासनिक हिंदी के बारे में जानने के बाद अब हम वाणिज्य, व्यापार और बैंकिग के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली हिंदी की चर्चा करेंगे।

23.4.4 वाणिज्य, व्यापार और बैंकिग के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी

कार्यालयी अथवा प्रशासनिक हिंदी की भांति ही वाणिज्य तथा व्यापार की हिंदी की भी विशिष्ट शब्दावली होता है और मुहावरा भी होता है। आज हम बाजार के बिना अपने सुविधा सम्पन्न, सुखी जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। कहने का आशय यह कि बाजार या व्यापार व वाणिज्य का क्षेत्र हमारे जीवन का सबसे बड़ा महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। हम कोई भी सामान खरीदते हैं तो उसकी खरीद का 'बिल' लेते हैं। 'भुगतान' की भी 'रसीद' लेते हैं। इसी तरह 'पूँजी' की बचत से लेकर 'हिसाब-किताब तक किसी न किसी रूप में हम इस भाषा से जुड़े हुए हैं। प्राचीन काल से ही भारत व्यापार के क्षेत्र में अग्रणी रहा है इसलिए यहाँ की बोलियों में भी व्यापार और वाणिज्य की शब्दावली का पर्याप्त विकास हुआ है जो आज भी काफी हद तक अपने मूल रूप में विद्यमान है। अंग्रेजी के प्रसार और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य की भाषा होने से इस क्षेत्र में अंग्रेजी की शब्दावली का बड़े पैमाने पर समावेश हुआ है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए:

'लेखाकरण प्रणाली द्वारा सभी वित्तीय कार्य व्यापार लेखा बहियों में रिकार्ड कर लिए जाते हैं। लेखाकरण में दर्ज लेन-देन सम्बन्धी बिल बीजक, रसीद, कैश मेमो आदि के रूप में लिखित प्रमाण उपलब्ध होने चाहिए।'

आप ध्यान दीजिए कि इन वाक्यों में बीजक, लेन-देन और बहियाँ जैसे परम्परागत हिसाब-किताब के शब्दों के साथ ही अंग्रेजी के रिकार्ड, बिल, कैश मेमो जैसे शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं किन्तु जब हम किसी अखबार में प्रकाशित बाजार सम्बन्धी खबर पढ़ते हैं तो भाषा-शैली कुछ अलग दिखाई देती है। एक उदाहरण देखिए–

शेयरों में भारी गिरावट से सोने की कीमतों में उछाल

नई दिल्ली, 08 दिसम्बर। शेयरों में गिरावट का सिलसिला थम नहीं रहा। रुपये में कमजोरी लगातार बनी हुई है। इसी बीच स्थानीय आभूषण निर्माताओं में सोने की माँग बढ़ने से सर्राफा

बाजार में सोना 700 रूपये महँगा होकर प्रति 10 ग्राम 38000 रुपये के पार पहुँच गया है। चाँदी की लिवाली बढ़ने से चाँदी भी 300 रुपये महँगी होकर 45000 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है।

बैंकिंग का क्षेत्र भी व्यापार एवं वाणिज्य का ही क्षेत्र है। इस क्षेत्र की प्रयुक्तियाँ भी हमारे जीवन में सामान्य रूप से शामिल हो गई हैं। देश में आज ऐसे लोगों की संख्या सम्भवत: बहुत कम होगी जिनका बैंक में खाता न हो। ऐसे में बैंकिंग के क्षेत्र की प्रयुक्तियों से प्राय: सामना होना सामान्य बात है। बैंकिग शब्दावली की रचना को हम निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित करके समझ सकते हैं।

1. **अंग्रेजी और अरबी-फारसी के शब्द**–बकाया, सौदा, अदायगी, बैंकर, ट्रेड यूनियन, कूपन, बजट, पार्सल, खपत अमानत नुकसान, बेदखली, दलाल आदि।
2. **संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्द और बोलचाल के प्रचलित शब्द**–क्षतिपूर्ति-मुआवजा, व्यवसाय-कारोबार, प्रतिष्ठा-हैसियत सांविधिक-कानूनी, आवेदन-अर्जी, शेष-बाकी, मूल्य-कीमत, आदि।
3. **परम्परागत देशी बैंकिंग प्रणाली सम्बन्धी शब्द**–फुटकर, बट्टा, घाटा, पट्टा, साहूकार, हुँडी, गिरवी, बेबाकी पत्र आदि।
4. **संकर शब्द**–रद्द नोट, नकदी प्रमाण पत्र, वसूली प्रभार, शेयरधारक, संशोधित बजट आदि।
5. **निर्मित शब्दावली या अभिव्यक्तियाँ**–शीर्ष (एपेक्स), निविदा (टेंडर), देयता (लाइबिलिटी) आदि।
6. **संस्कृतनिष्ठ शब्द**–निधि, धारक, उद्यम, अतिदेय, स्वामित्व, अनुबंध, अवमूल्यन, आवंटन आदि।
7. **अंग्रेजी शब्दों के शब्दानुवाद**– Taxation (कराधान), free economy (मुक्त अर्थव्यवस्था), Annual Account (वार्षिक लेखा) Export oriented (निर्यातोन्मुखी) आदि।

23.4.5 वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी

व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में हिंदी के स्वरूप को समझने के बाद अब आपके समक्ष वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी की प्रयुक्तियों को स्पष्ट किया जाएगा। वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी का व्यवहार क्षेत्र शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रयोग या कार्यान्वयन का क्षेत्र है। आधुनिक युग में पश्चिम के सम्पर्क में आने के बाद भारत में भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ हुए और हिंदी में वैज्ञानिक लेखन प्रारम्भ हुआ। प्राचीन कालीन वैज्ञानिक

टिप्पणी

चिंतन और अनुसंधान की भारतीय परम्परा, जो मध्यकाल में खंडित हो चली थी, पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान के सम्पर्क में आकर एक बार पुनः जीवंत हो गई। यही कारण है कि हिंदी के वैज्ञानिक लेखन में अंग्रेजी के साथ ही बड़े पैमाने पर संस्कृत शब्दावली का प्रयोग मिलता है। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रयुक्ति का क्षेत्र बहुत विस्तृत है जिसके अन्तर्गत भौतिकी, रसायन शास्त्र, प्राणिविज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, खगोलिकी, आयुर्विज्ञान, अभियांत्रिकी आदि अनेक प्रयुक्तियाँ दिखाई देती हैं। विज्ञान और तकनीकी प्रयुक्ति में विषय-वस्तु का महत्त्व होता है। भाषा-शैली का नहीं। फलस्वरूप इसकी शब्दावली सीधी होती है। संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग इस प्रयुक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है। जैसे– k (पाई), g (जी), (अल्फा), B (बीटा) s (गामा) आदि। इसी प्रकार कुछ अन्य प्रयुक्तियाँ देखिए–

अभिकेन्द्रीय बल, ग्रह, गतिज शक्ति, अतिरिक्त दाब, सफेट, क्लोरीन, अभिकलन नेटच्यून, टेलिस्कोप आदि।

23.4.6 विधि के क्षेत्र में हिंदी

आजादी के बाद हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया जिसके बाद इसे विधि और न्याय व्यवस्था की भाषा बनाने का प्रश्न उठा। हिंदी में विधिक शब्दावली तैयार की गई। इसके लिए अंग्रेजी शब्दों के पर्याय बनाने के लिए संस्कृत तथा अरबी-फारसी शब्दों को आधार बनाया गया।

विधि की भाषा सुनिश्चित और बेहद सतर्क होती है। उसमें जो कुछ कहा जाता है उसका सीधा और सुनिश्चित अर्थ निकलता है। विधिक भाषा में निश्चित सन्दर्भ के लिए निश्चित शब्द ही प्रयुक्त होता है इसमें पर्याय की छूट नहीं होती है। उदाहरण के रूप में निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए:

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पंद्रह वर्ष की अवधि के पश्चात् विधि द्वारा–

(क) अंग्रेजी भाषा का, या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएँ।

यहाँ 'अनुच्छेद', 'विधि', 'उपबंधित' तथा 'विनिर्दिष्ट' आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है, जो विधि के क्षेत्र के अतिरिक्त सामान्यता प्रयुक्त नहीं होते हैं। यह विधि के क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली है। इन शब्दों के स्थान पर इनका कोई भी पर्याय इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 23.3

1. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए।

(क) सरकारी पत्र की भाषा होती है।	(i) विधि संबंधी भाषा
(ख) संविधान के अनुच्छेदों की भाषा है।	(ii) कार्यालयी भाषा
(ग) भौतिकी, रसायनशास्त्र आदि से संबंधित भाषा है।	(iii) वैज्ञानिक भाषा

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

(क) ..... को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

(ख) मुझे आपसे अनुरोध करने का ..... हुआ है।

(ग) प्राचीन काल से ही भारत व्यापार के क्षेत्र में ..... रहा है।

(घ) ..... प्रणाली द्वारा सभी वित्तीय कार्य व्यापार लेखा बहियों में रिकार्ड कर लिए जाते हैं।

23.4.7 संचार माध्यमों में हिंदी

संचार माध्यमों के मुख्यत: दो रूप हैं। पहले माध्यम के तहत समाचारपत्र तथा पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। दूसरे माध्यम के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन के अतिरिक्त सोशल मीडिया के विविध प्लेटफॉर्म आते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि संचार माध्यमों से सम्बन्धित प्रयुक्तियों में भाषा के लिखित और मौखिक, दोनों रूप शामिल होते हैं। लिखी हुई बात को हम एक से अधिक बार पढ़कर समझ सकते हैं लेकिन मौखिक भाषा का एक बार में समझ में आना जरूरी होता है इसीलिए संचार माध्यमों में दोनों तरह की भाषाओं का रूप काफी अलग होता है। जैसे, अखबार की भाषा में चलन में आ गई संक्षिप्तियों का प्रयोग खूब होता है–भाजपा, सपा, बसपा, जदयू, आदि जबकि रेडियो, टेलीविजन या अन्य इलैक्ट्रानिक माध्यमों में ऐसी संक्षिप्तियों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है। जैसा कि हम जानते हैं कि सभी संचार माध्यमों का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के साथ सम्प्रेषण होता है इसलिए इन माध्यमों की भाषा सहज, सरल, स्पष्ट और बोधगम्य होनी चाहिए किन्तु संचार माध्यमों द्वारा जीवन के प्राय: हर क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों का प्रसार होता है। धर्म, कला, साहित्य, तकनीकी विषय, खेलकूद, राजनीति से लेकर बाजार आदि सभी विषयों की सामग्री इनमें प्रस्तुत की जाती है। ऐसे में संबंधित क्षेत्र की विशिष्ट शब्दावली उनमें अवश्य ही समाहित होती है। फिर भी भाषा को सहज, सरल और व्यावहारिक बनाए रखना पड़ता है। संचार माध्यमों की हिंदी में विभिन्न क्षेत्रों की शब्दावली का सामान्य बोलचाल का रूप तो दिखाई देता है साथ ही अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय और उनके अंग्रेजी रूप भी इस्तेमाल होते हैं। जैसे–प्राइम टाइम, सीधा प्रसारण, समाचार बुलेटिन, ऑन कैमरा, सम्पादकीय आदि।

23.4.8 विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी

विज्ञापन के क्षेत्र का संबंध काफी हद तक संचार माध्यमों से होता है। संचार माध्यमों का इस्तेमाल विज्ञापन के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है किन्तु इन माध्यमों के अतिरिक्त विज्ञापन के अन्य माध्यम हैं–दीवारों पर लिखे गए विज्ञापन और पोस्टर, चौराहों पर लगी होर्डिंग या साइन बोर्ड तथा सिनेमा का पर्दा। इस तरह हम यह समझ सकते हैं कि विज्ञापन के सामान्यत: तीन रूप हैं। (1) दृश्य (2) श्रव्य और (3) मुद्रित। सिनेमा के पर्दे, टेलीविजन और अन्य इलेक्ट्रानिक माध्यमों पर तीनों रूपों का प्रयोग होता है। पत्र-पत्रिकाओं, साइन बोर्ड या होर्डिंग तथा दीवारों पर लिखे गए या चिपकाए गए पोस्टरों में पहले तथा तीसरे रूप का प्रयोग होता है और रेडियो पर दूसरे रूप का इस्तेमाल किया जाता है। ये तीनों ही रूप एक दूसरे के पूरक के तौर पर कार्य करते हैं।

विज्ञापन का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं होता है बल्कि अपनी ओर ध्यान भी खींचना होता है। व्यापारिक विज्ञापनों में इतना आकर्षण होना चाहिए कि उसे देखने-सुनने वाला उसकी आवश्यकता महसूस करने लगे। प्रचारपरक विज्ञापन इतना प्रभावशाली होना चाहिए कि उसे देखने-सुनने पर विज्ञापन में कही जा रही बात पर गौर करने के साथ उसे मानने का विचार मन में पैदा हो जाए। रोजगार सम्बन्धी विज्ञापनों में सूचना की स्पष्टता तथा पूर्णता अपेक्षित होती है।

कुछ उदाहरण देखिए–

टाटा स्काई–इसको लगा डाला तो लाइफ झिंगालाला।

लैक्मे आइकॉनिक काजल– काजल इतना गहरा जो समय को मात दे।

शॉप क्लूज– टिंग से लेकर टोंग, डिंग से लेकर डोंग

घड़ी डिटर्जेंट– पहले इस्तेमाल करें, फिर विश्वास करें। आदि

क्रियाकलाप 23.3

बाहर आते-जाते दीवारों पर लिखे या पोस्टर के रूप में चिपकाए गए कुछ विज्ञापनों की भाषा पर विचार कीजिए और यहाँ लिखने का प्रयास कीजिए।

23.4 आपने क्या सीखा

- किसी विशेष प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा को प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं। इनका प्रयोग प्रशासन, विधि, बैंक, वाणिज्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में होता है।
- भाषा के प्रयोजन और संदर्भ महत्वपूर्ण होते हैं तथा प्रयुक्ति की संकल्पना के साथ सामाजिक भूमिका की संकल्पना जुड़ी होती है।

- भाषा के विशिष्ट प्रयोगों के आधार पर विभिन्न प्रयुक्तियों का निर्माण होता है।
- प्रयुक्ति के अनेक आधार हैं। जैसे– शब्दावली, विषय-क्षेत्र, संप्रेषण का तरीका आदि।
- हिंदी के विविध प्रयुक्ति क्षेत्र हैं। जैसे– (i) सामान्य व्यवहार (ii) साहित्यिक हिंदी (iii) कार्यालयी हिंदी (iv) वाणिज्य, व्यापार या बैंक में प्रयुक्त हिंदी (v) वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी (vi) विधि के क्षेत्र की हिंदी (vii) संचार माध्यम की हिंदी (viii) विज्ञापन की हिंदी इत्यादि।

23.5 सीखने के प्रतिफल

- परिवेशगत भाषा-प्रयोगों को सीखते हैं और उन पर सवाल करते हैं(जैसे-रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, बस-स्टैंड, ट्रक, ऑटो रिक्शा के पीछे लिखी गई भाषा में एक ही तरह की बातों पर ध्यान देते हैं।
- परिवेश से हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं को भी सीखते हैं एवं भारतीय भाषाओं के आपसी संबंधों को भी समझते हैं।
- विभिन्न विषयों के आपसी संबंधों की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के द्वारा व्यक्त करते हैं।
- विभिन्न अवसरों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं(जैसे-विचार-विमर्श, वैचारिक लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।

23.6 योग्यता विस्तार (संदर्भ ग्रंथ)

1. हिंदी शिक्षण : संकल्पना और प्रयोग, डॉ. हीरालाल बछोतिया, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
2. प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
3. प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद, पूरनचंद टंडन, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली

23.7 पाठांत प्रश्न

1. प्रयोजनमूलक हिंदी से आप क्या समझते हैं?

2. प्रयुक्ति की संकल्पना पर विचार कीजिए।

3. प्रयुक्ति के आधारों को स्पष्ट कीजिए।

4. बोलचाल या सामान्य व्यवहार की हिंदी का आशय स्पष्ट कीजिए।

5. उदाहरण देते हुए साहित्यिक हिंदी के विषय में लिखिए।

6. अखबार में प्रकाशित किसी समाचार का उदाहरण देते हुए व्यापार एवं वाणिज्य की हिंदी का परिचय दीजिए।

7. बैंकिंग के क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाली विभिन्न श्रेणियों की शब्दावली लिखिए।

23.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1 1. (ग) प्रयोजनमूलक भाषा

2. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य (घ) असत्य

23.2 1. स्वयं करें

2. (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत

23.3 1. (क) II (ख) I (ग) III

2. (क) 14 सितम्बर 1949 ई. (ख) निर्देश (ग) अग्रणी (घ) लेखाकरण